एनटीपीसी NTPC

कोरबा KORBA

कोरबा किरण

अपने लोग, अपनी रचना

एनटीपीसी कोरबा हिंदी अनुभाग की छमाही गृह पत्रिका

अंक : अप्रैल से सितंबर (वर्ष 2025-2026)

कोरबा सुपर थर्मल पावर प्लांट

एनटीपीसी का 51वां व एनटीपीसी कोरबा का 43वां स्थापना दिवस

परियोजना प्रमुख की कलाम से

प्रिय पाठकों,

एनटीपीसी कोरबा द्वारा छमाही हिंदी गृह पत्रिका 'कोरबा किरण' के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका संगठन में कार्यरत कार्मिकों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होने के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

एनटीपीसी कोरबा में कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक उपयोग को सुनिश्चित करने हेतु निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इस क्रम में हिंदी में पत्राचार को प्रोत्साहन, द्विभाषी प्रणाली के प्रभावी कार्यान्वयन, हिंदी कार्यशालाओं एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की नियमित बैठकें तथा कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरित करने जैसे अनेक सकारात्मक कदम उठाए गए हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य हिंदी को केवल एक औपचारिक भाषा तक सीमित न रखकर, उसे कार्य-संस्कृति का स्वाभाविक अंग बनाना है।

'कोरबा किरण' इन सभी प्रयासों को सशक्त एवं सार्थक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह कर्मचारियों के विचारों, अनुभवों एवं सृजनात्मक अभिव्यक्तियों को एक प्रभावी मंच प्रदान करती है, जिसके माध्यम से आपसी संवाद को प्रोत्साहन मिलता है।

मैं इस प्रसंशनीय प्रयास के लिए राजभाषा अनुभाग, संपादक मंडल तथा पत्रिका में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणास्पद एवं उपयोगी सिद्ध होगी।

इस प्रकाशन से जुड़े सभी सहयोगियों को मेरी शुभकामनाएँ।

किशोर चंद्र पात्र

(किशोर चंद्र पात्र)

महाप्रबंधक – प्रचालन एवं अनुरक्षण
एनटीपीसी कोरबा

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि एनटीपीसी कोरबा की छमाही हिंदी गृह पत्रिका "कोरबा किरण" का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रभावी क्रियान्वयन का सशक्त माध्यम है, बल्कि हमारे कर्मचारियों की सृजनात्मक प्रतिभा, विचारशीलता एवं साहित्यिक अभिव्यक्ति को भी एक सुसंगठित मंच प्रदान करती है।

हिंदी हमारे देश की आत्मा एवं अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग प्रशासनिक कार्यों में पारदर्शिता, सरलता एवं आत्मीयता को बढ़ावा देता है। इस पत्रिका के माध्यम से कार्यालय में किए जा रहे हिंदी संबंधी कार्यों, उपलब्धियों तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों की मौलिक रचनाओं का प्रकाशन निश्चित रूप से हिंदी के प्रचार-प्रसार को नई दिशा प्रदान करेगा।

मुझे विश्वास है कि "कोरबा किरण" पत्रिका ज्ञान, प्रेरणा एवं सृजनात्मकता की नई रोशनी फैलाते हुए कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने एवं अपनी साहित्यिक प्रतिभा को निखारने हेतु प्रोत्साहित करेगी। यह पत्रिका न केवल राजभाषा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करेगी, बल्कि संगठनात्मक संस्कृति को भी समृद्ध बनाएगी।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों, संपादकीय मंडल एवं योगदानकर्ताओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में भी यह पत्रिका निरंतर प्रगति के नए आयाम स्थापित करेगी।

सादर शुभकामनाओं सहित,

शत्रुघन

(शत्रुघन बेहेरा)

अपर महाप्रबंधक
मानव संसाधन, एनटीपीसी कोरबा

अभिप्रेरण

एनटीपीसी कोरबा द्वारा छमाही हिंदी गृह पत्रिका 'कोरबा किरण' का प्रकाशन एक प्रशंसनीय एवं प्रेरणादायी प्रयास है। यह पत्रिका कर्मचारियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ संगठन में राजभाषा हिंदी के प्रभावी उपयोग को सुदृढ़ करने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

मानव संसाधन विभाग द्वारा कर्मचारियों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु समय-समय पर विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएँ, हिंदी प्रतियोगिताएँ एवं जागरूकता गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य कार्यस्थल पर हिंदी को सरल, सहज एवं व्यवहारिक रूप में अपनाने हेतु सकारात्मक वातावरण का निर्माण करना है।

'कोरबा किरण' कर्मचारियों के विचारों, अनुभवों एवं रचनात्मकता को साझा करने का एक सशक्त मंच प्रदान करती है, जिससे आपसी संवाद, सहभागिता एवं संगठनात्मक समरसता को बल मिलता है।

'कोरबा किरण' के प्रकाशन से जुड़े राजभाषा अनुभाग, संपादक मंडल तथा सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका अपने उद्देश्यों की सफलतापूर्वक पूर्ति करेगी।

शुभकामनाओं सहित।

(शशि शेखर)

संपादकीय

सादर अभिवादन,

एनटीपीसी कोरबा की छमाही हिंदी गृह पत्रिका 'कोरबा किरण' के इस नवीन अंक को आपके करकमलों में सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका केवल विचारों और उपलब्धियों का संकलन नहीं है, बल्कि यह एनटीपीसी कोरबा परिवार के सामूहिक प्रयासों, रचनात्मकता और संगठनात्मक प्रतिबद्धता का सजीव प्रतिबिंब भी है।

इस अंक में लेखों, रचनात्मक प्रस्तुतियों, राजभाषा हिंदी के प्रयोग, परियोजना से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियों का सुंदर समन्वय देखने को मिलेगा। यह अत्यंत संतोष का विषय है कि हमारे सहकर्मी न केवल अपने कार्यक्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त कर रहे हैं, बल्कि साहित्यिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक गतिविधियों में भी सक्रिय सहभागिता निभा रहे हैं।

मुझे आशा है कि 'कोरबा किरण' के माध्यम से न केवल हिंदी के साहित्यिक स्वरूप को मंच मिलेगा, बल्कि कार्यालयीन वातावरण में हिंदी के सहज प्रयोग को भी बढ़ावा मिलेगा। हम यह मानते हैं कि राजभाषा का संवर्धन केवल नियमों का पालन भर नहीं, बल्कि हृदय से स्वीकृत और व्यवहार में उतारी गई संस्कृति है, और यही भावना इस पत्रिका की प्रेरणा है।

मैं इस अवसर पर उन सभी रचनाकारों के हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अपने व्यस्त दिनचर्या के बीच समय निकालकर इस साहित्यिक यात्रा में योगदान दिया। साथ ही, संपादकीय टीम को भी साधुवाद, जिन्होंने इस अंक को संकलित करने में योगदान प्रदान किया।

आशा है कि 'कोरबा किरण' का यह अंक आप सभी को सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करेगा और संगठन के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ बनाएगा। साथ ही पाठकों से निवेदन है कि इस पत्रिका के प्रत्येक अंक को पढ़ें, सराहें और अपने सुझाव देकर इसे और बेहतर बनाने में योगदान दें। आपका हर सुझाव एवं रचनात्मक सहभागिता ही इस प्रयास को निरंतर प्रेरणा और प्रोत्साहन प्रदान करती रहेगी।

(लखन)
कार्यपालक (राजभाषा)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणात्मक नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्रोत्साहन के माध्यम से अपने साथियों में राजभाषा-प्रेम की ज्योति जलाए रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थों के हितों का ध्यान रखते हुए अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा—हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्धन के प्रति सदैव उर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिंदी!

मुख्य संरक्षक

किशोर चंद्र पात्र
मुख्य महाप्रबंधक एवं परियोजना प्रमुख
एनटीपीसी लिमिटेड, कोरबा

परामर्श मण्डल

शत्रुघन बेहेरा
महाप्रबन्धक (प्रचालन एंड अनुरक्षण)

शशि शेखर
अपर महाप्रबन्धक (मानव संसाधन)

सुमित राइबगकर
उप महाप्रबन्धक (मानव संसाधन)

आराधना प्रधान
प्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक मंडल

लखन
कार्यपालक (मानव संसाधन-राजभाषा)
(संपादक)

तनुज शर्मा
अभियंता (प्रचालन)

सपना कुमारी
वरिष्ठ सहायक अभियंता
(मैकेनिकल मेंटेनेंस-ऑफ साईट)

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
एनटीपीसी कोरबा का 51वां स्थापना दिवस	
परियोजना प्रमुख संदेश	01
महाप्रबंधक (अनुरक्षण एवं प्रचालन) शुभकामना संदेश	02
अपर महाप्रबंधक (मानव ससाधन) अभिप्रेरण	03
संपादक संदेश	04
राजभाषा प्रतिज्ञा	05
हिंदी गतिविधियां	
हिंदी पखवाड़े का आयोजन	06-08
हिंदी तिमाही बैठके	09
हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन	09
नराकास का गठन एवं संचालन	10
लेख	
राजभाषा कार्यान्वयन : संविधान से व्यवहार तक	11-12
साझा संसाधन, निजीकरण और सामुदायिक जिम्मेदारी	13-14
दल्हा – यात्रा वृतांत	15

विषय	पृष्ठ
कविता	
मेरा बेस लोड तुम हो	16
नव ऊर्जा का गीत – एनटीपीसी	17
ज़िंदगी	18
एनटीपीसी – ऊर्जा , विश्वास और अभिमान	19
लो आ गई बसंत	20
अनमोल ऊर्जा	21
मोर पावन छत्तीसगढ़	22
हिंदी को प्रतिनिधित्व करने दो, वर दे माँ	23
गोवा की सैर	24
माता – पिता	25
मैंने एक कुआँ खोदा जो कलेश बना	26
अन्य	
अंक के रचनाकर	27
प्रेरक प्रसंग	28-29
हिंदी ज्ञान व शब्दावली	30
कार्यालीन कार्यों में प्रयुक्त टिप्पणिया	31-37
रचना संगम	38-39
एनटीपीसी कोरबा सुर्खियों में	40
हिंदी साहित्य प्रश्नोत्तरी	41

"कोरबा किरण" आपकी अपनी पत्रिका है। इसमें आपके एवं आपके परिवार के सदस्यों की मौलिक रचनाओं का स्वागत है। इसके अगले अंक के लिए आप तकनीकी लेख, कहानी, कविता, यात्रा-वृत्तांत, संस्मरण, ज्ञानवर्धक रचनाएं आदि हिंदी अनुभाग (lakhan02@ntpc.co.in) को भिजवाएं और अपनी सृजनात्मक प्रतिभा को उभरने का अवसर दें। पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए आपके सुझावों का स्वागत है।

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के हैं, उनसे प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं।

हिन्दी पखवाड़े का शुभारंभ

कोरबा सुपर थर्मल पावर स्टेशन (एनटीपीसी, कोरबा) में हिन्दी पखवाड़ा 14 सितम्बर 2025 से 29 सितम्बर 2025 के बीच बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। हिन्दी पखवाड़े का शुभारंभ 14 सितम्बर 2025 को माननीय श्री राजीव खन्ना, परियोजना प्रमुख महोदय का संदेश जारी कर किया गया

एनटीपीसी NTPC
कोरबा KORBA

हिंदी दिवस के अवसर पर परियोना प्रमुख का संदेश

प्रिय साथियों,

हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

हिंदी हमारी राजभाषा होने के साथ-साथ हमारे राष्ट्रीय गौरव, संस्कृति और पहचान का प्रतीक है। यह भाषा हमें विविधताओं में भी एकता का बोध कराती है और देश के सभी क्षेत्रों को जोड़ने का सशक्त माध्यम है। हिंदी पखवाड़ा हमें यह स्मरण कराता है कि हम न केवल अपने कार्यों में दक्षता प्राप्त करें, बल्कि उन्हें अपनी मातृभाषा और राजभाषा के गर्व के साथ आगे बढ़ाएँ।

एनटीपीसी कोरबा देश की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। जिस प्रकार हम बिजली का उत्पादन कर राष्ट्र को ऊर्जा प्रदान कर रहे हैं, उसी प्रकार हमें हिंदी को अपने कार्यों और संवाद में अपनाकर भाषा को भी नई शक्ति और ऊर्जा प्रदान करनी चाहिए।हिंदी का प्रयोग हमारे प्रशासनिक कार्यों को सहज, पारदर्शी और आमजन के लिए अधिक सुलभ बनाता है।

हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियाँ एवं प्रतियोगिताएँ आयोजित की जा रही हैं। सभी सहकर्मियों से आग्रह कि आप इन कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लें और अपनी प्रतिभा, रचनात्मकता तथा विचारों को हिंदी के माध्यम से अभिव्यक्त करें। यह न केवल भाषा के प्रचार-प्रसार में योगदान होगा, बल्कि हमें अपनी संस्कृति और कार्यसंस्कृति से और गहराई से जोड़ने का अवसर भी देगा।

आइए, हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों और संचार में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करेंगे। यही हमारे संगठन की प्रगतिशील कार्यसंस्कृति, हमारी सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्र निर्माण में हमारी भूमिका का प्रमाण होगा।

ऊर्जा उत्पादन के साथ हिंदी का उत्थान भी हमारा दायित्व है।

आप सभी को हिंदी पखवाड़ा की हार्दिक शुभकामनाएँ।

जय हिंद। जय एनटीपीसी।

दिनांक: 14 सितंबर, 2025

राजीव खन्ना
परियोजना प्रमुख, एनटीपीसी कोरबा

परियोजना प्रमुख महोदय ने अपने संदेश में हिन्दी की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 'हिंदी हमारी राजभाषा होने के साथ-साथ हमारे राष्ट्रीय गौरव, संस्कृति और पहचान का प्रतीक है। यह भाषा हमें विविधताओं में भी एकता का बोध कराती है और देश के सभी क्षेत्रों को जोड़ने का सशक्त माध्यम है। हिंदी का प्रयोग हमारे प्रशासनिक कार्यों को सहज, पारदर्शी और आमजन के लिए अधिक सुलभ बनाता है। एनटीपीसी कोरबा देश की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

जिस प्रकार हम बिजली का उत्पादन कर राष्ट्र को ऊर्जा प्रदान कर रहे हैं, उसी प्रकार हमें हिंदी को अपने कार्यों और संवाद में अपनाकर भाषा को भी नई शक्ति और ऊर्जा प्रदान करनी चाहिए।'

उन्होने सभी से आग्रह किया कि हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लें और हिन्दी को केवल एक पखवाड़े तक सीमित न रखकर, अपनी कार्यशैली और व्यवहार का अंग बनाएं।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान एनटीपीसी, कोरबा में राजभाषा प्रतिज्ञा ग्रहण समारोह का आयोजन:

हिन्दी पखवाड़े 2025 के अंतर्गत कार्यालय में निम्नलिखित प्रतियोगितायें आयोजित की गई : -

हिन्दी पखवाड़ा 2025 के अवसर पर एनटीपीसी, कोरबा कार्यालय द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें अधिकारियों, कर्मचारियों, महिलाओं व छात्रों व छात्राओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं का उद्देश्य प्रतिभागियों में हिन्दी भाषा के प्रति रुचि बढ़ाना, उनके भाषा कौशल को निखारना तथा उन्हें हिन्दी के विविध आयामों से परिचित कराना था।

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

हिन्दी श्रुतलेखन प्रतियोगिता (हिन्दीत्तर भाषी कर्मचारी वर्ग हेतु)

ऑनलाइन राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता

महिला प्रतिभागियों हेतु हिन्दी गीत, लोकगीत, कविता एवं समाचार वाचन प्रतियोगिता

विद्यालयी छात्रों हेतु हिन्दी श्रुतलेखन एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता

हिन्दी सम्मेलन एवं समापन (सम्मेलन वरिष्ठ अधिकारियों हेतु)

एनटीपीसी, कोरबा कार्यालय में हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन श्री राजीव खन्ना, परियोजना प्रमुख की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

समापन समारोह में श्रीमती आराधना प्रधान, प्रबंधक (मानव संसाधन) द्वारा उपस्थित सभी सदस्यों को पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं गतिविधियों की जानकारी दी गई। श्री राजीव खन्ना, परियोजना प्रमुख द्वारा हिन्दी पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित गतिविधियों की सराहना की तथा सभी प्रतिभागियों को उनके उत्साह, रचनात्मकता और सक्रिय सहभागिता के लिए बधाई दी। उन्होंने इस प्रकार के आयोजन नियमित रूप से आयोजित किए जाने की आवश्यकता पर भी बल दिया।

समापन समारोह के अवसर पर हिन्दी सम्मेलन सह राजभाषा वार्ता कार्यक्रम का आयोजन किया किया गया, जिसमें एनटीपीसी, कोरबा कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। उक्त कार्यक्रम के दौरान राजभाषा हिन्दी के विविध पर आयामों संक्षिप्त रूप से चर्चा की गई।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन

राजभाषा विभाग, भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुसार प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया जाना अनिवार्य है। इसी क्रम में एनटीपीसी, कोरबा कार्यालय में दिनांक 27.06.2025 तथा सितंबर माह में राजभाषा हिन्दी से संबंधित बैठकों का नियमित रूप से आयोजन किया गया।

इन बैठकों में संबंधित अधिकारियों की उपस्थिति में तिमाही के दौरान किए जा रहे राजभाषा हिन्दी कार्यों की विस्तृत समीक्षा की गई तथा तिमाही प्रगति रिपोर्ट पर चर्चा की गई। साथ ही विभिन्न विभागों द्वारा हिन्दी में किए जा रहे कार्यों की प्रगति का मूल्यांकन किया गया और राजभाषा अधिनियम एवं नियमों के अनुरूप अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने पर बल दिया गया। बैठकों के दौरान सभी विभागों से राजभाषा हिन्दी के नियमों का समुचित अनुपालन सुनिश्चित करने तथा कार्यालयीन पत्राचार, टिप्पणियों एवं अन्य कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने का अनुरोध किया गया।

एनटीपीसी, कोरबा कार्यालय में हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन

कार्यालय के सभी कार्मिकों को हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार के प्रति अधिक जागरूक एवं संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से दिनांक 18.06.2025 व 25.09.2025 में हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं के माध्यम से कार्मिकों को दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रेरित किया गया। कार्यशालाओं के दौरान प्रतिभागियों को कंप्यूटर पर हिन्दी टाइपिंग, यूनिकोड फॉन्ट, ई-ऑफिस एवं अन्य सॉफ्टवेयर में हिन्दी के प्रयोग से संबंधित व्यावहारिक जानकारी भी प्रदान की गई।

इसके अतिरिक्त इन कार्यशालाओं में सभी कार्मिकों को राजभाषा हिन्दी से संबंधित नियमों, अधिनियमों एवं शासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के बारे में विस्तार से अवगत कराया जाता है, जिससे कार्मिकों में राजभाषा के प्रति समझ और जागरूकता बढ़ी। सभी कार्यशालाएँ अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुईं और अपने निर्धारित उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करने में सफल रहीं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोरबा

कोरबा में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन भारत सरकार गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के कार्यालय ज्ञापन क्रमांक 12024/06/2012–रा.भा. (का-2)/2443 दिनांक 22 अक्तूबर 2012 के तहत किया गया है। अक्तूबर 2012 से ही नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोरबा के समन्वय का दायित्व एनटीपीसी लिमिटेड कोरबा के पास है।

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

एनटीपीसी लिमिटेड
NTPC Limited

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोरबा
एनटीपीसी लिमिटेड, कोरबा
(भारत सरकार का उद्यम)

एनटीपीसी, कोरबा में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कोरबा की वर्ष 2025-26 की प्रथम छमाही बैठक दिनांक 03 जुलाई 2025 को एनटीपीसी, कोरबा के प्रशासनिक भवन स्थित परियोजना प्रमुख सम्मेलन कक्ष में श्री राजीव खन्ना, अध्यक्ष नराकास एवं परियोजना प्रमुख, एनटीपीसी (कोरबा) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम, रिपोर्ट का प्रेषण, प्रयोग, प्रचार-प्रसार तथा कार्यान्वयन के विभिन्न मदों पर विस्तृत चर्चा के साथ ही सदस्य कार्यालयों मे किए जा रहे राजभाषा संबंधी कार्यों की प्रगति की समीक्षा भी की गई। उक्त बैठक की कार्रवाही पवन कुमार मिश्रा, सदस्य सचिव , नराकास, कोरबा द्वारा पूर्ण की गई।

नराकास कोरबा की प्रथम छमाही बैठक

क्या आप जानते है ?

भारत के संविधान में राजभाषा से संबंधित प्रावधान सबसे अधिक विस्तृत रूप में भाग–17 के अंतर्गत दिए गए हैं, जो भाषा को प्रशासन की रीढ़ मानते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन : संविधान से व्यवहार तक

भूमिका

भारत की राजभाषा हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि प्रशासन को जनसामान्य से जोड़ने का सशक्त माध्यम है। संविधान में वर्णित प्रावधानों, राजभाषा नीति, नियमों और अधिनियमों के माध्यम से यह सुनिश्चित किया गया है कि संघ के केंद्रीय कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रभावी, व्यवस्थित और सतत रूप से हो। प्रस्तुत लेख में राजभाषा नीति का सिंहावलोकन, नियम व अधिनियमों की सरल व्याख्या तथा संघ के केंद्रीय कार्यालयों में अनिवार्य रूप से किए जाने वाले कार्यों पर चर्चा करेंगे।

राजभाषा नीति का सिंहावलोकन

भारत की प्रशासनिक व्यवस्था में राजभाषा हिंदी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। संविधान निर्माताओं ने यह भली-भांति समझा था कि देश की बहुसंख्यक जनता की भाषा को प्रशासन की मुख्यधारा में लाना लोकतंत्र को सशक्त बनाता है। इसी दृष्टि से संविधान के भाग–17 में राजभाषा से संबंधित विस्तृत प्रावधान किए गए।

राजभाषा नीति का मूल उद्देश्य केवल दस्तावेज़ों का हिंदी अनुवाद करना नहीं है, बल्कि प्रशासनिक सोच, निर्णय प्रक्रिया और कार्य संस्कृति में हिंदी को स्वाभाविक रूप से स्थापित करना है। जब अधिकारी और कर्मचारी हिंदी में कार्य करते हैं, तो निर्णय अधिक स्पष्ट होते हैं और उनका प्रभाव आम नागरिक तक सरलता से पहुँचता है।

केंद्रीय कार्यालयों में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी योजनाएँ, निर्देश और सूचनाएँ जनसामान्य के लिए सहज, पारदर्शी और बोधगम्य हों। यह नीति प्रशासन और जनता के बीच विश्वास को भी मजबूत करती है।

राजभाषा कार्यान्वयन की समग्र अवधारणा

राजभाषा कार्यान्वयन एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें नीति, प्रशिक्षण और व्यवहार—तीनों का संतुलन आवश्यक है। सभी केंद्रीय कार्यालयों में इसे दैनिक कार्यप्रणाली का अभिन्न अंग बनाया गया है।

राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के प्रमुख क्षेत्र इस प्रकार हैं:

- कार्यालयीन पत्राचार एवं टिप्पणियाँ, जिनमें हिंदी को प्राथमिकता दी जाए।
- प्रशासनिक दस्तावेज़, नियमावली और रिपोर्ट, जो द्विभाषी या हिंदी में उपलब्ध होने चाहिए।
- सूचना प्रौद्योगिकी, जहाँ ई-ऑफिस, पोर्टल और सॉफ्टवेयर हिंदी-सक्षम हों।
- कर्मचारियों को हिंदी कार्यशालाओं के माध्यम से हिंदी संबंधी प्रशिक्षण दिया जाए।

जब ये सभी तत्व समन्वय के साथ कार्य करते हैं, तब राजभाषा नीति कागज़ से निकलकर व्यवहार में दिखाई देती है।

"राजभाषा का सफल कार्यान्वयन सहभागिता और सतत समीक्षा से ही संभव है।"

राजभाषा नियम एवं अधिनियम

राजभाषा नीति का आधार संविधान और उसके अंतर्गत बनाए गए अधिनियमों व नियमों पर आधारित है। इनका उद्देश्य हिंदी के प्रयोग को निर्देशित करना है, न कि बाध्यकारी कठिनाई उत्पन्न करना।

संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 में हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है तथा इसके विकास और प्रचार की जिम्मेदारी संघ सरकार को दी गई है।

राजभाषा अधिनियम, 1963 यह स्पष्ट करता है कि प्रशासनिक कार्यों में हिंदी का प्रयोग किस प्रकार संतुलित व सरल रूप से किया जाएगा। इससे गैर-हिंदी भाषी राज्यों के हित भी सुरक्षित रहते हैं।

राजभाषा नियम, 1976 के अंतर्गत राज्यों को क, ख और ग क्षेत्रों में विभाजित कर पत्राचार और कार्यों की भाषा निर्धारित की गई है, जिससे व्यावहारिक स्तर पर स्पष्टता बनी रहती है।

संघ के केंद्रीय कार्यालयों में राजभाषा संबंधित आवश्यक कार्य

केंद्रीय कार्यालयों में राजभाषा नीति को प्रभावी बनाने हेतु कुछ कार्य विशेष रूप से अनिवार्य हैं। इनका पालन न केवल नियमों की दृष्टि से आवश्यक है, बल्कि प्रशासनिक गुणवत्ता के लिए भी उपयोगी है।

- **कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकतम प्रयोग**
  टिप्पणियाँ, कार्यालय ज्ञापन और आंतरिक पत्राचार हिंदी में किए जाएँ।
- **द्विभाषी व्यवस्था का पालन**
  नामपट्ट, संकेतक, प्रपत्र और मुहर द्विभाषी रूप में हों।
- **डिजिटल माध्यमों में हिंदी का समावेश**
  वेबसाइट, पोर्टल और ई-ऑफिस प्रणाली हिंदी-सक्षम बनाई जाए।
- **प्रशिक्षण एवं प्रोत्साहन**
  कर्मचारियों को हिंदी प्रशिक्षण दिया जाए तथा उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया जाए।
- **निरंतर समीक्षा एवं निरीक्षण**
  राजभाषा समिति की नियमित बैठकें आयोजित कर प्रगति की समीक्षा की जाए।

राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन एक जीवंत प्रक्रिया है, जो प्रशासन को अधिक संवेदनशील, पारदर्शी और जनोन्मुख बनाती है। जब नियम, नीति और व्यवहार में सामंजस्य स्थापित होता है, तब हिंदी केवल एक भाषा न रहकर प्रभावी शासन का सशक्त माध्यम बन जाती है।

लखन
कार्यपालक (राजभाषा)

साझा संसाधन, निजीकरण और सामुदायिक जिम्मेदारी

आज पूरी दुनिया पर्यावरण संकट, जल संकट, जंगलों की कटाई, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के तेजी से खत्म होने की समस्या से जूझ रही है। भारत जैसे विकासशील देश में यह समस्या और भी गंभीर है, क्योंकि यहाँ जनसंख्या अधिक है, गरीबी है और बड़ी आबादी की आजीविका सीधे प्रकृति पर निर्भर है। ऐसे में यह सवाल बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है कि प्राकृतिक संसाधन किसके होने चाहिए, किसके नियंत्रण में होने चाहिए और उनका उपयोग कैसे किया जाना चाहिए ताकि आज की जरूरतें भी पूरी हों और आने वाली पीढ़ियों के लिए भी कुछ बचा रहे।

प्राकृतिक संसाधन जैसे पानी, जंगल, हवा, समुद्र, जमीन और खनिज मानव जीवन की बुनियाद हैं। लेकिन आज हम इन्हें ऐसे उपयोग कर रहे हैं जैसे ये कभी खत्म ही नहीं होंगे। जब कोई संसाधन सबके लिए खुला होता है और हर व्यक्ति उसका अपने फायदे के लिए अधिक से अधिक उपयोग करता है, तो अंत में वह संसाधन नष्ट हो जाता है। इस स्थिति को "Tragedy of the Commons" कहा जाता है। इसका मतलब है साझा संसाधनों की त्रासदी। इसका सबसे सरल उदाहरण गाँव का तालाब है। अगर हर व्यक्ति बिना सोचे-समझे उसमें से पानी निकालता रहे, तो कुछ समय बाद तालाब सूख जाएगा और सबको नुकसान होगा।

इस समस्या के पीछे मनुष्य की एक खास सोच काम करती है। हर व्यक्ति यह मानता है कि अगर वह संसाधन का उपयोग नहीं करेगा तो कोई और कर लेगा, इसलिए बेहतर है कि वह पहले ही अपना हिस्सा ले ले। व्यक्ति को अपना लाभ साफ दिखाई देता है, लेकिन सामूहिक नुकसान दूर और अनदेखा लगता है। यही सोच जंगलों की कटाई, भूजल के अंधाधुंध दोहन, नदियों के प्रदूषण और समुद्र में मछलियों की कमी का कारण बन रही है।

कुछ लोग मानते हैं कि इस समस्या का समाधान निजीकरण में है। उनका तर्क है कि जब किसी संसाधन का मालिक तय होगा, तब वह उसकी रक्षा करेगा और उसे नष्ट नहीं होने देगा। यह बात काफी हद तक सही भी है। निजी खेत का किसान अपनी जमीन की देखभाल करता है, निजी बागान वाला पेड़ लगाता है और निजी बोरवेल वाला पानी बचाने की कोशिश करता है। निजी स्वामित्व से जिम्मेदारी की भावना आती है।

लेकिन अगर हर चीज निजी कर दी जाए, तो एक नई समस्या पैदा हो जाती है। पानी अगर पूरी तरह निजी हो जाए तो गरीब प्यासा रह जाएगा। जंगल अगर निजी हो जाएँ तो जैव विविधता खत्म हो जाएगी। समुद्र अगर निजी हो जाए तो मछुआरे बेरोजगार हो जाएँगे। हवा तक अगर व्यापार बन जाए तो साँस लेना भी महँगा हो जाएगा। यह स्थिति सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों के खिलाफ होगी। इसलिए यह भी साफ है कि अंधाधुंध निजीकरण कोई समाधान नहीं है।

दूसरी ओर, अगर सभी संसाधन पूरी तरह साझा छोड़ दिए जाएँ और कोई नियंत्रण न हो, तो भी समस्या होगी। कोई जिम्मेदारी नहीं लेगा, अवैध कटाई बढ़ेगी, भूजल खत्म होगा और जंगल उजड़ेंगे। यही Tragedy of the Commons की असली तस्वीर है। इसलिए जरूरी है कि हम निजीकरण और साझा व्यवस्था के बीच एक संतुलित रास्ता खोजें।

इस संतुलित रास्ते को सामुदायिक प्रबंधन कहा जा सकता है। इसका अर्थ है कि स्थानीय लोग मिलकर अपने संसाधनों का प्रबंधन करें। गाँव के लोग मिलकर तय करें कि कितना पानी निकाला जाए, कितने पेड़ काटे जाएँ, कब चराई हो और कब मछली पकड़ी जाए। जब संसाधन का नुकसान सीधे समुदाय को होता है, तो लोग उसे बचाने में ज्यादा रुचि लेते हैं।

भारत में इसके कई सफल उदाहरण हैं। राजस्थान के सूखे इलाकों में गाँवों ने मिलकर जोहड़ बनाए और पानी के उपयोग के नियम तय किए। आज वहाँ पानी की स्थिति पहले से बेहतर है। कई राज्यों में Joint Forest Management के तहत ग्राम समितियाँ जंगलों की रक्षा कर रही हैं और बदले में जंगल से आजीविका भी प्राप्त कर रही हैं। केरल में मछुआरा समितियाँ मछली पकड़ने का समय और तरीका तय करती हैं ताकि समुद्र की संपदा खत्म न हो।

भारत जैसे देश में संसाधन प्रबंधन आसान नहीं है। यहाँ गरीबी है, जनसंख्या का दबाव है और बेरोजगारी के कारण लोग सीधे प्रकृति पर निर्भर हैं। लेकिन यही भारत की ताकत भी है, क्योंकि यहाँ समाज की भूमिका बहुत मजबूत है। पंचायत, ग्राम सभा और सामाजिक दबाव के जरिए नियमों को प्रभावी बनाया जा सकता है।

आधुनिक पर्यावरण दर्शन यह मानता है कि संसाधन न तो पूरी तरह बाजार के हवाले किए जा सकते हैं और न ही पूरी तरह राज्य के। उन्हें समाज, सरकार और बाजार के बीच संतुलन में रखना होगा। कुछ संसाधन जैसे हवा, नदियाँ, समुद्र और जैव विविधता पूरी तरह सार्वजनिक होने चाहिए क्योंकि ये जीवन के लिए अनिवार्य हैं। कुछ संसाधन जैसे गाँव के तालाब, चरागाह और ग्राम वन सामुदायिक प्रबंधन में होने चाहिए। वहीं खनन, ऊर्जा उत्पादन और उद्योग जैसे क्षेत्रों में नियंत्रित निजीकरण हो सकता है, लेकिन मालिकाना नहीं बल्कि केवल उपयोग का अधिकार।

अत्यधिक निजीकरण का रास्ता हमें उस दुनिया की ओर ले जाएगा जहाँ पानी बोतल में बिकेगा, जंगल रियल एस्टेट बनेंगे और समुद्र रिसॉर्ट में बदल जाएँगे। यह विकास नहीं बल्कि विनाश होगा। भारतीय संस्कृति हमें याद दिलाती है कि धरती हमारी माता है और हम उसके मालिक नहीं बल्कि संरक्षक हैं। संसाधन हमारी संपत्ति नहीं, आने वाली पीढ़ियों की धरोहर हैं।

आज जरूरत है एक ऐसी नीति की जो अधिकार और जिम्मेदारी को साथ लेकर चले, आजीविका को संरक्षण से जोड़े और समाज को निर्णय प्रक्रिया में शामिल करे। यही सतत विकास का रास्ता है। संसाधन न तो लूट की वस्तु हैं और न ही बिक्री की मशीन। वे आने वाली पीढ़ियों की अमानत हैं, जिन्हें हमें बचाकर सौंपना है।

अगर हम आज संतुलन नहीं बनाएँगे, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें माफ नहीं करेंगी। विकास वही है जो प्रकृति के साथ चले, उसके खिलाफ नहीं।

कंवर भान गोदरा
सहायक अधिकारी (पर्यावरण प्रबंधन)

दल्हा पहाड़ की यात्रा

कभी-कभी ज़िंदगी में सबसे खूबसूरत यादें किसी होटल या लग्ज़री ट्रिप से नहीं, बल्कि पसीने, थकान और दोस्तों की हंसी से बनती हैं। ऐसी ही एक यादगार कहानी है हमारी 17 लोगों की ट्रेकिंग यात्रा – दल्हा पहाड़, छत्तीसगढ़।

यह अकलतरा के पास स्थित है, जांजगीर-चांपा जिला, छत्तीसगढ़। पहाड़ की ऊँचाई लगभग 750–800 मीटर (लगभग 2500–2600 फीट) के आसपास होती है। इसकी चोटी से आसपास के जंगलों और मैदानों का खूबसूरत विहंगम दृश्य मिलता है |यहाँ पास मे कई पुराने मंदिर और धार्मिक स्थल हैं, जैसे अर्धनारीश्वर मंदिर, नाग-नागिन मंदिर और श्री कृष्ण मंदिर। पहाड़ के ऊपर सूर्य कुंड और पवन कुंड जैसे पवित्र जल स्रोत हैं, जिनके पानी को धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है। खास कर नाग पंचमी और महाशिवरात्रि जैसे त्योहारों पर भक्तों की भारी भीड़ यहाँ आती है।

जिस प्रकार हमार ग्रुप डी ऑपरेशन प्लांट मे अपनी कर्मठता के लिए जाना जाता है उसी प्रकार आउट ऑफ प्लांट ग्रुप अक्टिविटीएस मे भी हम सभी बढ़ चढ़ कर भाग लेते है | इसी क्रम मे 17 दिसम्बर 2025 को सुबह की हल्की ठंड और मन में ढेर सारा उत्साह लेकर हम सब दोस्त दल्हा पहाड़ की ओर निकले। बैग में पानी, कुछ स्नैक्स और दिल में एडवेंचर का जुनून। जैसे-जैसे रास्ता चढ़ाई वाला होता गया, सांसें तेज़ होती गईं, लेकिन हौसले और भी मजबूत।दल्हा पहाड़ का ट्रेक सिर्फ एक रास्ता नहीं था, बल्कि प्रकृति से जुड़ने का अनुभव था। चारों तरफ हरियाली, चट्टानी रास्ते, पक्षियों की आवाज़ें और बीच-बीच में दोस्तों की मस्ती। कोई थककर बैठ जाता, तो कोई हौसला बढ़ाने के लिए आवाज़ लगाता – "बस थोड़ा सा और!"

कई घंटों की मेहनत के बाद जब हम दल्हा पहाड़ की चोटी पर पहुँचे, तो वो पल शब्दों में बयान करना मुश्किल है। नीचे फैली हुई धरती, ऊपर खुला आसमान और अंदर एक अजीब-सी शांति।

वहाँ खड़े होकर महसूस हुआ कि

"ज़िंदगी भी ट्रेकिंग जैसी ही है,
कदम चलते रहो, मंज़िल खुद मिल जाती है।"

शिखर पर हमने ढेर सारी तस्वीरें लीं, हंसी-मज़ाक किया और उस पल को दिल में कैद कर लिया। कोई थकान नहीं, कोई शिकायत नहीं — सिर्फ सुकून। दल्हा पहाड़ की यह ट्रेकिंग सिर्फ एक ट्रिप नहीं थी, यह दोस्ती, हिम्मत और ज़िंदगी को खुलकर जीने का सबक थी।

तनुज शर्मा
अभियंता (प्रचालन)

मेरा बेस लोड तुम हो

मेरी ज़िन्दगी के कंट्रोल रूम में,
अलार्म बजे द नाइट और नून में,
तुम आये जैसे परफेक्ट सिंक,
मेरी लाइफ़ हो गई स्टेबल इन वन ब्लिंक।

मेरा दिल लो लोड पे चल रहा था,
बॉयलर कोल्ड, स्टीम भी जल रहा था,
तुमने फर्नेस को दिया इग्नाइट,
और आ गई लाइफ़ रेटेड आउटपुट ब्राइट।

तुम्हारी स्माइल टरबाइन से भी स्मूद,
ना वाइब्रेशन, ना हंटिंग, ओनली सुकून प्रूफ।
तुम्हारे हाथ ल्यूब ऑयल जैसे क्लीन,
मेरे सारे दुख हो जाते हैं मीन।

तुम्हारी आवाज़ डीसीएस जैसी क्लियर,
मेरे सारे पैरामीटर्स ग्रीन, नो फियर।
तुम्हारे वर्ड्स जैसे परफेक्ट फीडबैक ट्यून,
मेरी लाइफ़ हो जाती है सुपर फाइन सून।

जब लाइफ़ में फॉल्ट आये, सिस्टम ट्रिप हो,
वोल्टेज डाउन और फ़्रीक्वेंसी स्लिप हो,
तुम बन जाते हो मेरा ब्लैक-स्टार्ट प्लान,
मेरी डेड सी ग्रिड को कर देते हो रन।

नाइट शिफ्ट, ब्रेकडाउन, बॉयलर की आग,
ट्यूब लीकेज, स्ट्रेस, और थकान का राग,
आईडी-एफडी-पीए फैन की निरंतर फाइट,
मैं हूँ तुम्हारे साथ डे एंड नाइट।

ना फोर्स्ड शटडाउन, ना डिस्टेंस का फियर,
ना मिसअलाइनमेंट, ओनली लव सिंसियर।
तुम हो मेरे बेस लोड, कॉन्स्टेंट और ट्रू,
मेरा बेस्ट एफिशिएंसी पॉइंट सिर्फ तुम हो, यू।

सिर्फ जॉब नहीं, सिर्फ रोल नहीं,
तुम हो मेरी ज़िन्दगी, मेरी पूरी कहानी।
तुम हो मेरे लाइफटाइम पावर प्लांट,
मेरा फॉरएवर, मेरा करंट, मेरा कॉन्स्टेंट प्यार ।

मीनाक्षी बाला वर्मा
अपर महाप्रबन्धक (अनुबंध और सामग्री)

नव ऊर्जा का गीत – एनटीपीसी

हम चिंगारी से ज्वाला तक,
हर स्वप्न को आकार देते हैं,
जहाँ मुश्किलें रुक जाती हैं,
वहीं से हम राहें देते हैं।
हम हैं एनटीपीसी के अभियंता,
"ना" कहना हमने सीखा नहीं,
जो ठाना है, वो कर दिखाया,
रुकना हमने जाना नहीं।
नदी, कोयला, सूर्य, पवन,
हर शक्ति को हम साधें,
देश की धड़कन बनकर हम,
हर घर तक उजियारे बाँटें।
कल की सोच आज में लाएँ,
तकनीक से भविष्य गढ़ें,
ऊर्जा संक्रमण के इस युग में,
भारत को अग्रणी करें।
हम हैं एनटीपीसी के अभियंता,
कर्तव्य ही हमारा धर्म,
हर चुनौती अवसर बन जाए,
जब हो संकल्प और कर्म।
जहाँ अंधेरा डर बन जाए,
वहाँ दीपक बन जल जाते हैं,
कम साधनों में भी हम,
असंभव को संभव बनाते हैं।

अनुशासन, नवाचार, विश्वास,
यही हमारी पहचान,
राष्ट्र प्रथम, संगठन सर्वोपरि,
यही है हमारा अभियान।
वरिष्ठों का अनुभव दीपशिखा,
युवाओं की आँखों में आग,
पीढ़ियों का यह संगम ही,
एनटीपीसी की असली ताक़त, भाग्य और राग।
हम हैं एनटीपीसी के अभियंता,
न थकते हैं, न झुकते हैं,
भारत की ऊर्जा आत्मनिर्भरता में,
इतिहास नया लिखते हैं।
तो आओ साथी, शपथ लें हम,
हर दिन कुछ बेहतर करने की,
क्योंकि एनटीपीसी में काम नहीं,
यह साधना है राष्ट्र गढ़ने की।
हम हैं एनटीपीसी,
हम हैं संकल्प,
हम हैं ऊंची उड़ान —
और हम ही है
एनटीपीसी की असली पहचान।

आनंद पांडे
उप महाप्रबन्धक (विद्युत् अनुरक्षण)

ज़िंदगी

यादों के बक्से में,
ख़याल कई सँभाल रखे हैं,
ढेर सारी ख़ुशियों के साथ
कुछ हिसाब–किताब भी रखे हैं।
ये जो लेखा–जोखा है ना
तमाम उम्र का,
कुछ अनुभव साँझे,
ख़्वाबों तुम्हारे और हमारे।
हाँ, कुछ ऐसा कि
गुलाबों से भरी किताब हो,
खिलखिलाती धूप सी कभी ये ज़िंदगी,
कभी बारिश तो कभी नैनों से नीर बहाती ये ज़िंदगी।
हर लम्हा स्वाद चखें हम,
सफ़र को मुक़ाम सा जिएँ हम।
कभी बैठेंगे जो फ़ुर्सत में,
तो खोलेंगे पिटारा यादों का,
कुछ तुम कहना,
कुछ हम सुनेंगे।
कुछ अनकहे लफ़्ज़ों को,
ख़ामोशी में चुनेंगे।
हाँ अनकही बातें,
मुस्कान बनकर ढल जाएँगी,
बीते लम्हों की थकान,
इन यादों में घुल जाएँगी।

विनीता सैनी
वरिष्ठ प्रबंधक (मेंटेनेंस प्लानिंग)

एनटीपीसी – ऊर्जा, विश्वास और अभिमान

आज से बेहतर कल रचना है हमें,
स्थिरता नहीं, निरंतर गति में रहना है हमें।
गुणवत्ता हमारी आदत, प्रक्रिया हमारी पहचान,
हर कार्य में उत्कृष्टता, हर स्तर पर प्रमाण।
हर चुनौती को अवसर में बदलते हैं हम,
समर्पण और परिश्रम से आगे बढ़ते कदम।
हर कोने में उजाला, हर दिल में विश्वास,
ऊर्जा से जोड़े भारत का हर एक आवास।
हेलमेट, सेफ्टी शूज़, सतर्कता और प्रशिक्षण,
सिर्फ साधन नहीं, ये हैं जीवन रक्षण।
हर दिन, हर क्षण, यही संदेश दोहराएँ,
पहले सुरक्षा फिर ही आगे बढ़ पाएँ।
मूल्यों की मशाल हाथों में लिए,
हम बढ़ते हैं आगे, अडिग और निडर हैं जिए।
छोटे कदमों से चला जो सपना महान,
आज बना ऊर्जा का सशक्त विधान।

सपना कुमारी
वरिष्ठ सहायक अभियंता (मैकेनिकल मेंटेनेंस-ऑफ साईट)

लो फिर आ गई बसंत

फूलों की महक, मखमली हवा
चहचहाते खग, उल्लास नया
सूरज की नर्म रोशनी के संग
लो फिर आ गई बसंत

खेतों में पकी सरसों की फसल
पीला रंग, खुशहाली, हलचल
रसखीर पकवान के स्वाद के संग
लो फिर आ गई बसंत

कल शीतलता थी, फिर आयेगी
फिर ग्रीष्म काल, बसंत जायेगी
अविरल है जीवन, नित नया रंग
लो फिर आ गई बसंत

लेकर जीवन की नई उमंग
लो फिर आ गई बसंत

नेहा अग्रवाल
पत्नी - श्री मनीष अग्रवाल
उप महाप्रबन्धक (एमजीआर)

अनमोल ऊर्जा

ऊर्जा हमारी शान है ,ऊर्जा हमारा मान है।
उन्नति शिखर पर नित्य ही होता रहा गुणगान है।

मिलती जगत को रौशनी ,मिलता सदा ईंधन हमें।
ऊर्जा भरे उत्साह से ,खुशियां मिले खन खन हमें।
भरता इन्हीं से कोष भी औ राष्ट्र भी धनवान है।
उन्नति शिखर पर नित्य ही होता रहा गुणगान है।

ऊर्जा विविधता से भरी बिखरे प्रभाकर रश्मियां।
खिलखिलाते हैं विहग अरु मुस्कुरातीं तितलियां।
हर पुष्प महके शोख से जैसे सखा दिनमान है।
उन्नति शिखर पर नित्य ही होता रहा गुणगान है।

सबसे जरूरी तो यही तन -मन भरे हो स्फूर्ति से।
हो हृदय में दिव्यता झलके दमक मन मूर्ति से।
आभाष या प्रत्यक्ष ऊर्जा जान लो वरदान है।
उन्नति शिखर पर नित्य ही होता रहा गुणगान है।

आशा देशमुख
पत्नी - श्री विरेन्द्र कुमार देशमुख
उप प्रबंधक (मा सं -सीएसआर)

मोर पावन छत्तीसगढ़

ऋषि-मुनि शबरी की पावन धरती,
, रम्य रंजक जिनकी गाथाएं ।
आओ पावन छत्तीसगढ़ से,
तुमको हम परिचय कराएं।
गुरतुर-गुरतुर भाखा बोली,
मंधरस कस मीठी हमर छत्तीसगढ़ी बोली,।
रिश्तों में मिठास घोलती तीज और होली ।।

जैतखंभ जैसे कुतुब मीनार,
झर-झर करती चित्रकोट,
और तिरथगढ का जल प्रपात,
सौम्य,सुंदर है बस्तर की पठार।
जिनके आंचल में बहती है,
हसदेव,शिवनाथ,अरपा,पैरी,सोंढूर,
जीवनदायिनी महानदी की धार ।।

छत्तीसगढ़ भुइंया में है इनकी महिमा अपार ।
मोर छत्तीसगढ़ दाई के कोरा में,
लहलहाती सोने जैसे धान बालियां,
इसीलिए इसे कहते हैं
धान का कटोरा।।

छत्तीसगढ़ की इस धरती पर,
ही है उजियारे का द्वार,
हमारा प्यारा एनटीपीसी,
जिसका है हमें गर्व,मान और अभिमान ।
आओ इसका वंदन करे,
और करें स्वागत,सत्कार ।।
जय हो जय हो, पावन
छत्तीसगढ़ मइय्या ।।

सेवक राम कैवर्त
ड्राफ्समेन (व्यावसायिक उत्कृष्टता)

हिंदी को प्रतिनिधित्व करने दो

हिंदी को प्रतिनिधित्व करने दो
आगे आगे बढ़ने दो
मत रोको आगे बढ़ने दो
लक्ष्य निहारता है आपको
हिंदी को प्रतिनिधित्व करने दो

हिंदी है मातृभाषा अपनी
अपनत्व प्रेम की है जननी
बागों में फूल खिलने दो
हिंदी को प्रतिनिधित्व करने दो

सरल सुबोध शुगम है हिंदी
जन-जन के माथे की बिंदी
डाल पर हंसने गाने दो
हिंदी को प्रतिनिधित्व करने दो

अंतर धारा आंतरिक ऊर्जा
सबल सशक्त ऊर्धामिनी हिंदी
प्रांत प्रांत में अंकुर आने दो
हिंदी को प्रतिनिधित्व करने दो

बौनापन नहीं लाना होगा
उंगली पकड़ नहीं चलना होगा
आत्म बल पर बढ़ने दो
हिंदी को प्रतिनिधित्व करने दो

वर दे मां

वर दे मां
मैं अज्ञानी तेरा पुजारी
फूलों से कैसे करूं मां पूजा तुम्हारी
वे तो सब मुरझाए पढ़ें है
थाल पूजा की भला कैसे सजाऊ

अक्षत चंदन नृत्य के मांथ चढ़े हैं
आरती का दीप है
बाती नहीं है
तेल बिन रोशनी इठलाती नहीं है
राकेश को तिमिर भाता नहीं है
इसलिए हे मां

मैं अपने मन के भावों को
शब्दों में पिरोकर लाया हूं
दुष्टों को ललकारने
असहाय को सवारने

बदला हुआ तेवर दे
ऐसा नया स्वर दे
वर दे मां वर

राकेश खरे "राकेश. "
कनिष्ठ अभियंता, कर्मचारी विकाश केंद्र (सेवानिवृत्त)
बिलासपुर

गोवा की सैर

आओ-आओ किसी के बारे में बताती हूँ,
चलो आज तुम सबको गोवा की सैर कराती हूँ।
अरबी समुद्र की गोद में बैठा है पश्चिम तट पर,
हर पल का आनंद लो, यहाँ का शानदार है सफ़र।
रात की चाँदनी में पानी का वह तेज़ बहाव,
समुद्र की लहरें जैसे ज़िंदगी के उतार-चढ़ाव।
जोश भर देती है सुबह की किरणें सुनहरी,
शाम की लाली को देख ज़िंदगी लगती है प्यारी।
संकरी-संकरी हैं यहाँ की गलियाँ,
समुद्री तट पर खिलता है कल्पनाओं की कलियाँ।
उत्तर गोवा में बजती है मस्ती की धुन,
दक्षिण गोवा में होती है आराम की गुन।
पैरासेलिंग, बनाना राइड, कायकिंग का अपना मज़ा,
यह सब करते वक़्त, मन रहता है रोमांच से भरा।
क्रूज़ पर लोग खूब हैं खाते-पीते और नाचते-गाते,
एक बार जाने के बाद, वापस लौटना नहीं चाहते।
नाइट क्लब्स में रात होती है रंगीन,
टीटोज़ लेने पर मज़े करना होता है संगीन।
ऐसे सुंदर दृश्य, कि हो जाए मुश्किल विश्वास करना,
बागा की रात देखो, लगेगा जैसे हो कोई सपना।
अनेक प्रकार के सीफ़ूड मिलते हैं यहाँ,
इतने लज़ीज़ क्रैब और लॉब्स्टर मिलेंगे और कहाँ।
यहाँ फ़ोर्ट, लाइटहाउस और है एक भूतिया चर्च,
पर इस चर्च में जाने के लिए मत कीजिए पैसे खर्च।
समुद्री विशाल तट पर जाकर हो जाता है मन लीन,
चाहे हो बागा, अरम्बोल, अंजना या हो पैन्डोलिन।
रेत के महल बन जाते हैं यहाँ बड़ी आसानी से,
अनेक सीपियाँ-शंख पा जाओगे पानी से।
लगता है जैसे हो सपनों का अद्भुत संसार,
मन करता है जाएँ यहाँ पर बार-बार।
यहाँ की मधुरिम यादों को है सजाना,
क्योंकि यह शहर है खुशियों का ख़ज़ाना।

— सुनीधि श्रीवास्तव
पुत्री - श्री रंजय श्रीवास्तव
उप महाप्रबन्धक (सूचना प्रौद्योगिकी)

माता पिता

माता पिता ने बचपन से है पाला,
ज़िंदगी का हर कर्तव्य उन्होंने है सिखाया।
बच्चों के बोलने से उनके चलने तक,
उनका साथ मेरे संग रहा है हर पल।
उनके बिना जीवन व्यर्थ है,
खास उनके साथ बिताया हर पल है।
उँगली पकड़कर वे चलना सिखाते हैं,
गलतियों पर वे हमें समझाते हैं।
न जाने घुटनों से कब पैरों पर बच्चा खड़ा हुआ,
माता-पिता की छाँव में, वह कब बड़ा हुआ।
उनके चरणों में चारों धाम के आशीर्वाद हैं बसते,
उनको छूने मात्र से मेरे सारे पाप हैं धुलते।
हमारे बचपन में लोरी गा के वे थे हमें सुलाते,
पर हम बच्चे उन्हें रात भर थे जगाते।
बोया था हिम्मत के बीज, उन्होंने हमारे अंदर,
हम बच्चे चाहते हैं उनको बनाना अमर।
माता-पिता, इन दो शब्दों में मिल जाता संसार,
पिता रात में जैसे ध्रुव तारा, दिशा दिखाती माँ।
माँ की ममता लगती बच्चों को बहुत प्यारी,
रात में अच्छा लगता है उनसे सुनके कहानी।
माता-पिता हैं भगवान के समान,
हमें कभी नहीं करना चाहिए उनका अपमान।
हमारे सपनों के लिए वे दिन-रात एक कर देते हैं,
जो भी हम माँगे, माता-पिता ख़रीद देते हैं।
पिता के लाए हुए खिलौने, बच्चों को बड़ी पसंद आते हैं,
माँ की बनाई गोल रोटी, खाने में बहुत भाती है।
बच्चों की छोटी सी मुस्कान, उनको खुश कर जाती है,
माँ की गोद, बच्चों को सबसे ज़्यादा अच्छी लग जाती है।
हमारे बिना कुछ माँगे, वे हमें सब कुछ दे देते हैं,
हमारे रूठ जाने पे वे हमें मनाते हैं।
वे हमारे खातिर पूरी दुनिया से लड़ जाते हैं,
हमारे बीमार होने पर, वे उलझन में पड़ जाते हैं।
उन्होंने बचपन में कुछ कोमल पंख दिए थे,
आज उन्हीं को खोल हम ऊँचाइयों में हैं उड़ते।
संपूर्ण ब्रह्मांड में उनके जैसा कोई नहीं,
उनकी बतलाई हर एक बात है सही।
आख़िर उन्होंने ही तो बड़ा किया है,
पर हमने उन्हें अपने दिल से अलग किया है।
उनके बिन हम जी न सकेंगे,
उनके साथ बिताया हर लम्हा, हम भूल न सकेंगे।

— सिमरन श्रीवास्तव
पुत्री - श्री रंजय श्रीवास्तव
उप महाप्रबन्धक (सूचना प्रौद्योगिकी)

मैंने एक कुआँ खोदा जो क्लेश बना

मैंने एक कुआँ खोदा
जो क्लेश बना
समय पतझड़ सा बिता
शीतल जल का स्रोत बना
सूखे फूल और पत्ते उसमे गए समा
वही जीवन औषधि का स्रोत बना
मैंने एक कुआँ खोदा
जो क्लेश बना

समय उत्सव का आया
गांव में वो पूजा का स्रोत बना
बालक बालिकाओ ने कातिक नहाया
और गीतों का भंडार बना
मैंने एक कुआँ खोदा
जो क्लेश बना

परन्तु उन गीतों की मंद पड़ रही आवाज
बालक बालिकाओ का मौन बना राज
माँ - बापू ने उसको अकेला छोड़ा
अब वर वधु का आता नही जोड़ा
बड़ी बेटी को भी रहता मलाल
मंझली बेटी नही करती कोई सवाल
छोटी बेटी ने रीत को तोड़ा
एक पिता ने जुआ खेला
मैंने एक कुआँ खोदा
जो क्लेश बना

खरक सिंह
पिता - श्री लखन
कार्यपालक (राजभाषा)

रामधारी सिंह 'दिनकर'

रामधारी सिंह 'दिनकर' हिन्दी साहित्य के ऐसे महान कवि, लेखक एवं निबंधकार थे, जिन्होंने अपने सशक्त लेखन से राष्ट्रीय चेतना को स्वर दिया। वे आधुनिक हिन्दी साहित्य में वीर रस के श्रेष्ठ कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। राष्ट्रवाद और राष्ट्रीयता उनके काव्य की मूल भूमि रही, इसी कारण उन्हें 'युग-चारण' और 'काल के चारण' कहा गया।

जीवन परिचय

दिनकर जी का जन्म 23 सितंबर 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में एक भूमिहार ब्राह्मण परिवार में हुआ। उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से इतिहास एवं राजनीति विज्ञान में स्नातक (बी.ए.) किया। साथ ही संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेज़ी और उर्दू भाषाओं का गहन अध्ययन किया। प्रारंभ में वे अध्यापक रहे, तत्पश्चात 1934 से 1947 तक बिहार सरकार में विभिन्न प्रशासनिक पदों पर कार्य किया।

स्वतंत्रता के बाद वे मुज़फ़्फ़रपुर के लंगट सिंह कॉलेज में हिन्दी विभागाध्यक्ष रहे। 1963–65 के बीच भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति तथा 1965–71 तक भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार रहे। वे तीन बार राज्यसभा के सदस्य भी चुने गए।

कवि और विचारक के रूप में दिनकर

स्वतंत्रता से पहले दिनकर जी एक विद्रोही कवि के रूप में उभरे और स्वतंत्रता के बाद उन्हें 'राष्ट्रकवि' कहा गया। उनकी कविताओं में एक ओर ओज, क्रांति, आक्रोश और वीरता है, तो दूसरी ओर प्रेम, सौंदर्य और कोमल भावनाओं की गहरी अभिव्यक्ति भी मिलती है। इन दोनों प्रवृत्तियों का श्रेष्ठ समन्वय उनकी प्रसिद्ध कृतियों 'कुरुक्षेत्र' और 'उर्वशी' में दिखाई देता है।

वे केवल कवि ही नहीं, बल्कि एक निर्भीक चिंतक और राष्ट्रहित में स्पष्ट वक्ता भी थे। 1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद संसद में पढ़ी गई उनकी कविताएँ भारतीय राजनीति के इतिहास में साहसिक हस्तक्षेप मानी जाती हैं।

प्रमुख कृतियाँ

दिनकर जी की रचनाएँ सामाजिक न्याय, समानता, शोषण के विरोध और मानववादी चेतना से ओतप्रोत हैं। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—

रश्मिरथी, कुरुक्षेत्र, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा, संस्कृति के चार अध्याय, हुंकार, रेणुका, द्वंद्वगीत

'उर्वशी' मानवीय प्रेम और संबंधों पर आधारित काव्य है, जबकि 'कुरुक्षेत्र' महाभारत के शांति पर्व का आधुनिक काव्यात्मक रूप है। 'संस्कृति के चार अध्याय' में उन्होंने भारत की सांस्कृतिक एकता पर गहन विचार प्रस्तुत किए।

सम्मान एवं उपलब्धियाँ

1959 में साहित्य अकादमी पुरस्कार – संस्कृति के चार अध्याय, 1959 में पद्म विभूषण, 1972 में ज्ञानपीठ पुरस्कार – उर्वशी, 'कुरुक्षेत्र' को विश्व के 100 श्रेष्ठ काव्यों में स्थान, तीन बार राज्यसभा सदस्य, मरणोपरांत भी उन्हें अनेक सम्मान मिले। भारत सरकार ने उनकी स्मृति में डाक टिकट जारी किया तथा उनकी जन्म शताब्दी पर देश-भर में कार्यक्रम आयोजित किए गए।

रामधारी सिंह दिनकर हिन्दी साहित्य के ऐसे स्तंभ हैं, जिनकी रचनाएँ आज भी राष्ट्रप्रेम, साहस, आत्मसम्मान और मानवीय मूल्यों की प्रेरणा देती हैं। उनकी कविताएँ केवल साहित्य नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा की आवाज़ हैं। अपनी लेखनी के माध्यम से वे सदैव भारतीय जनमानस में अमर रहेंगे।

आज ही क्यों नहीं ?

एक बार की बात है कि एक शिष्य अपने गुरु का बहुत आदर-सम्मान किया करता था |गुरु भी अपने इस शिष्य से बहुत स्नेह करते थे लेकिन वह शिष्य अपने अध्ययन के प्रति आलसी और स्वभाव से दीर्घसूत्री था | सदा स्वाध्याय से दूर भागने की कोशिश करता तथा आज के काम को कल के लिए छोड़ दिया करता था | अब गुरूजी कुछ चिंतित रहने लगे कि कहीं उनका यह शिष्य जीवन-संग्राम में पराजित न हो जाये | आलस्य में व्यक्ति को अकर्मण्य बनाने की पूरी सामर्थ्य होती है | ऐसा व्यक्ति बिना परिश्रम के ही फलोपभोग की कामना करता है | वह शीघ्र निर्णय नहीं ले सकता और यदि ले भी लेता है,तो उसे कार्यान्वित नहीं कर पाता| यहाँ तक कि अपने पर्यावरण के प्रति भी सजग नहीं रहता है और न भाग्य द्वारा प्रदत्त सुअवसरों का लाभ उठाने की कला में ही प्रवीण हो पता है | उन्होंने मन ही मन अपने शिष्य के कल्याण के लिए एक योजना बना ली | एक दिन एक काले पत्थर का एक टुकड़ा उसके हाथ में देते हुए गुरु जी ने कहा –'मैं तुम्हें यह जादुई पत्थर का टुकड़ा, दो दिन के लिए दे कर, कहीं दूसरे गाँव जा रहा हूँ| जिस भी लोहे की वस्तु को तुम इससे स्पर्श करोगे, वह स्वर्ण में परिवर्तित हो जायेगी | पर याद रहे कि दूसरे दिन सूर्यास्त के पश्चात मैं इसे तुमसे वापस ले लूँगा|'

शिष्य इस सुअवसर को पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ लेकिन आलसी होने के कारण उसने अपना पहला दिन यह कल्पना करते-करते बिता दिया कि जब उसके पास बहुत सारा स्वर्ण होगा तब वह कितना प्रसन्न, सुखी,समृद्ध और संतुष्ट रहेगा, इतने नौकर-चाकर होंगे कि उसे पानी पीने के लिए भी नहीं उठाना पड़ेगा | फिर दूसरे दिन जब वह प्रातःकाल जागा,उसे अच्छी तरह से स्मरण था कि आज स्वर्ण पाने का दूसरा और अंतिम दिन है | उसने मन में पक्का विचार किया कि आज वह गुरूजी द्वारा दिए गये काले पत्थर का लाभ ज़रूर उठाएगा | उसने निश्चय किया कि वो बाज़ार से लोहे के बड़े-बड़े सामान खरीद कर लायेगा और उन्हें स्वर्ण में परिवर्तित कर देगा, दिन बीतता गया, पर वह इसी सोच में बैठा रहा की अभी तो बहुत समय है, कभी भी बाज़ार जाकर सामान लेता आएगा. उसने सोचा कि अब तो दोपहर का भोजन करने के पश्चात ही सामान लेने निकलूंगा. पर भोजन करने के बाद उसे विश्राम करने की आदत थी , और उसने बजाये उठ के मेहनत करने के थोड़ी देर आराम करना उचित समझा. पर आलस्य से परिपूर्ण उसका शरीर नीद की गहराइयों में खो गया, और जब वो उठा तो सूर्यास्त होने को था. अब वह जल्दी-जल्दी बाज़ार की तरफ भागने लगा, पर रास्ते में ही उसे गुरूजी मिल गए उनको देखते ही वह उनके चरणों पर गिरकर, उस जादुई पत्थर को एक दिन और अपने पास रखने के लिए याचना करने लगा लेकिन गुरूजी नहीं माने और उस शिष्य का धनी होने का सपना चूर-चूर हो गया |

"राजभाषा हिंदी प्रशासन को जनता से जोड़ने की सेतु भाषा है।"

पर इस घटना की वजह से शिष्य को एक बहुत बड़ी सीख मिल गयी: उसे अपने आलस्य पर पछतावा होने लगा, वह समझ गया कि आलस्य उसके जीवन के लिए एक अभिशाप है और उसने प्रण किया कि अब वो कभी भी काम से जी नहीं चुराएगा और एक कर्मठ, सजग और सक्रिय व्यक्ति बन कर दिखायेगा.

मित्रों, जीवन में हर किसी को एक से बढ़कर एक अवसर मिलते हैं , पर कई लोग इन्हें बस अपने आलस्य के कारण गवां देते हैं. यदि आप सफल, सुखी, भाग्यशाली, धनी अथवा महान बनना चाहते हैं तो आलस्य और दीर्घसूत्रता को त्यागकर, अपने अंदर विवेक, कष्टसाध्य श्रम, और सतत् जागरूकता जैसे गुणों को विकसित कीजिये और जब कभी आपके मन में किसी आवश्यक काम को टालने का विचार आये तो स्वयं से एक प्रश्न कीजिये – “आज ही क्यों नहीं ?”

"हिंदी हमारे देश की धड़कन है, जिसे देश के हित में गतिशील बनाए रखना हम सबकी राष्ट्रीय ज़िम्मेदारी है " – रामधारी सिंह दिनकर

पारिभाषिक शब्दावली

Per capita income – प्रति व्यक्ति आय ।
Per annum – प्रतिवर्ष ।
Nexus – संबंध ।
Mesne profits – अंत: कालीन लाभ ।
Locus standi – सुने जाने का अधिकार ।
Lingua Franca – जनभाषा ।
De novo – नए सिरे से
Dies non – अकार्य दिवस।
Bonafide – सद्भाव से, सद्भावी।
Aliter – अन्यथा ।

संक्षिप्त करना - abbreviate
संक्षिप्त रूप - abbreviation
पदत्याग, सत्ता त्याग, अधिकार त्याग - abdication
अपहरण करना, अगवा करना - abduct
अपहरण, अगवा - abduction
दुष्प्रेरित करना - abet
दुष्प्रेरण - abetment
स्थगन, अस्थायी रोक, प्रत्यर्पण - abeyance
पालन करना; दृढ़ रहना - abide
योग्यता - ability

हिंदी व्याकरण ज्ञान

झूठ के पांव नहीं होते :
झूठा आदमी बहस में नहीं ठहरता, उसे हार माननी होती है।

जैसा देश वैसा वेश :
जहाँ रहना हो वहीं की रीतियों के अनुसार आचरण करना चाहिए।

जैसा कन भर वैसा मन भर :
थोड़ी-सी चीज की जाँच करने से पता चला जाता है कि राशि कैसी है।

जो धावे सो पावे, जो सोवे सो खोवे :
जो परिश्रम करता है उसे लाभ होता है, आलसी को केवल हानि ही हानि होती है।

पर्यायवाची शब्द

अग्नि: आग, अनल, पावक, वह्नि
घर: गृह, सदन, आवास, आलय, निवास, निकेतन
जल: पानी, नीर, वारि, सलिल, तोय
कमल: जलज, पंकज, सरोज, राजीव, नीरज

हिंदी - अँग्रेजी टिप्पणियाँ

Please speak/discuss	कृपया चर्चा करें
Issue today	आज ही भेजिए/जारी करें
Please put up with relevant files/papers/documents	कृपया संबंधित फाइलों / कागजात / दस्तावेजों के साथ प्रस्तुत करें
Issue reminder urgently	तुरंत अनुस्मारक भेजिए
Discrepancy may be reconciled	विसंगति का समाधान कर लिया जाए
Expedite action	शीघ्र कार्रवाई करें
Budget provision exists for this expenditure	इस खर्च के लिए बजट में प्रावधान है
Explanation may be called for	स्पष्टीकरण मांगा जाए
Seen, thanks	देख लिया , धन्यवाद
Passed for payment	भुगतान के लिए पास किया जाता है
Issue press communiqué/ note	प्रेस विज्ञप्ति/प्रेस टिप्पणी जारी करें
Give top priority to this work	इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दें
Lowest quotations may be accepted	न्यूनतम दरें स्वीकार की जाएं
Bill has been scrutinized and found in order	बिल की जाँच की गई और उसे सही पाया गया
Draft reply is put up for approval	उत्तर का प्रारूप अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है
Acceptance is awaited	स्वीकृति की प्रतीक्षा है
Action as at 'A' above	ऊपर (क) के अनुसार कार्रवाई की जाए
Action had already been taken in the matter	मामले में कार्रवाई की जा चुकी है
Action as proposed may be taken	यथाप्रस्तावित कार्रवाई करें
Administrative approval may be obtained	प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए

Advance notice is necessary in this case	इस मामले में अग्रिम सूचना देनी आवश्यक है
Advice further development	आगे की प्रगति से अवगत कराएं
A matter of extreme urgency	अत्यंत आवश्यक मामला
Annual review in progress	वार्षिक समीक्षा की जा रही है
Appear for interview	साक्षात्कार के लिए उपस्थित हों
As a special case	विशेष मामले के रूप में
As discussed	चर्चा के अनुसार
As listed below	नीचे दी गई सूची के अनुसार
After adequate consideration	समुचित विचार के बाद
Agenda is sent herewith	कार्यसूची साथ भेजी जा रही है
Acknowledgment is awaited	पावती की प्रतीक्षा है
Action may be taken accordingly	तदनुसार कार्रवाई की जाए
Address all concerned	सर्वसंबंधित को लिखा जाए
Advice the action taken	की गई कार्रवाई से अवगत कराएं
After discussion	विचार-विमर्श के बाद
Agenda will follow	कार्यसूची बाद में भेजी जाएगी
All concerned to note	सर्वसंबंधित नोट करें

राजभाषा नियम, 1976 के तहत राज्यों को क, ख और ग क्षेत्रों में बाँटना प्रशासनिक सुविधा और संतुलन के उद्देश्य से किया गया है।

कार्यालयीन शब्दावली

Approved	अनुमोदित
As proposed	यथाप्रस्तावित
Budget	बजट
Dividend	लाभांश
Explanation	स्पष्टीकरण
Home Town	गृह नगर
Identity Card	पहचान पत्र
Matter	मामला
Obtain	प्राप्त करना
Outstanding	बकाया
Participation	भागीदारी
Please	कृपया
Practice	अभ्यास
Prescribed	निर्धारित
Proper Channel	उचित माध्यम
Put-up	प्रस्तुत कीजिए
Record	रिकॉर्ड
Reimbursement	प्रतिपूर्ति
Reply/Answer	उत्तर
Satisfactory Report	संतोषजनक रिपोर्ट
Selection Procedure	चयन प्रक्रिया
Top Priority	उच्च प्राथमिकता
Visiting Card	परिचय पत्र
Creation of post	पदों का सृजन
Permanent/ Temporary	स्थायी / अस्थायी

मानक टिप्पणियाँ

Acknowledgement is awaited	पावती की प्रतीक्षा है
Acknowledgement receipt	पावती दें, प्राप्ति सूचना भेजें
Action may be taken as proposed	यथाप्रस्तावित कार्रवाई की जाए
Action has not yet been initiated	कार्रवाई अभी तक शुरू नहीं की गई है
Ad hoc	तदर्थ
After adequate consideration	समुचित विचार के बाद
After consultation with	से परामर्श करके
Agenda is sent herewith	कार्यसूची साथ भेजी जा रही है
Agreed to	सहमति है
Approval may be accorded	अनुमोदन प्रदान कर दिया जाए
All concern should note	सभी संबंधित नोट करें
As mentioned above	जैसा ऊपर कहा गया है
Attention is invited to	की ओर ध्यान आकर्ित किया जाता है
Budget provision exists	बजट में प्रावधान है
Cases for disposal	निपटान के लिए मामले
Cases under investigation	मामले की जाँच की जा रही है
Charge handed over	कार्यभार सौंप दिया
Checked and found correct	जाँच की और सही पाया
Check and give remark	जाँच करें और टिप्पणी दें
Contract may be terminated	संविदा/ठेका समाप्त कर दिया जाए
Copy enclosed for ready reference	संदर्भ के लिए प्रति संलग्न है
Copy forwarded for information/ necessary action	सूचना/आवश्यक कार्रवाई के लिए प्रतिलिपि अग्रेित

Delay is regretted	देरी/विलंब के लिए खेद है
Departmental action is in progress	विभागीय कार्रवाई की जा रही है
Discrepancy may be reconciled	विसंगति का समाधान किया जाए
Do the needful	आवश्यक कार्रवाई करें
Eligible Candidate	पात्र उम्मीदवार
Ex-officio	पदेन
Ex-parte	एक पक्षीय
Ex-parte judgement	एकपक्षीय निर्णय
Ex post facto	कार्योत्तर
Extension of leave	छुट्टी बढ़ाना
Facilities are not available	सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं
For concurrence, please	सहमति के लिए
For disposal	निपटान के लिए
For early compliance	शीघ्र अनुपालन के लिए
For information	सूचनार्थ, सूचना के लिए
For ready reference	तत्काल संदर्भ के लिए
For record	रिकार्ड के लिए
For verification	सत्यापन के लिए
Forwarding letter	अग्रे-ण पत्र
Grant of special pay	विशे-ा वेतन की स्वीकृति
I agree with 'A' above	मैं ऊपर"क" से सहमत हूँ
I agree	मैं सहमत हूँ
Inter alia	साथ-साथ
In partial modification of	का आंशिक आशोधन करते हुए

In the order of seniority	वरि-ठता क्रम में
In toto	संपूर्णतः/पूरी तरह से
Justification for the proposal	प्रस्ताव का औचित्य
Keep with the file	फाइल में रखिए
Kindly look into it	कृपया इसे देख लें
Kindly reply	कृपया उत्तर दें
Last pay certificate (L.P.C)	अंतिम वेतन प्रमाणपत्र
Lay before	समक्ष रखना, सामने रखना
Leave not due	अदेय छुट्टी
Leave of absence	अनुपस्थिति की अनुमति
Leave on medical ground	चिकित्सा छुट्टी, बीमारी की छुट्टी
Letter of allotment	आबंटन पत्र
Letter of authority	प्राधिकार पत्र
Letter of credit	साख-पत्र
Letter of guarantee	गारंटी-पत्र
Letter of intent	आशय-पत्र
Liable of disciplinary action	अनुशासनिक कार्रवाई की जा सकती है
May be passed for payment	भुगतान के लिए पास किया जाए
Necessary report is still awaited	अपेक्षित रिपोर्ट अभी भी प्रतीक्षित है
Needful done	आवश्यक कार्रवाई की जा चुकी है
No objection certificate	अनापत्ति प्रमाण-पत्र, अनापत्ति पत्र
On probation	परिवीक्षाधीन
Paid annual leave	सवेतन वार्षिक अवकाश
Parliamentary affairs	संसदीय कार्य

Parliamentary committee	संसदीय समिति
Part time employment	अंशकालिक रोजगार
Proposal is in order	प्रस्ताव ठीक है
Put up for verfication	सत्यापन के लिए प्रस्तुत करें
Put up for orders please	आदेश के लिए प्रस्तुत
Required information is furnished herewith	अपेक्षित सूचना इसके साथ भेजी जा रही है
Reply should be issued today	उत्तर आज भेज दिया जाना चाहिए
Sanctioned as proposed	प्रस्ताव के अनुसार मंजूर
Seen, thanks	देख लिया, धन्यवाद
Subject to approval	बशर्ते कि अनुमोदन प्राप्त हो
Submitted for perusal	अवलोकनार्थ प्रस्तुत
Taking over charge	कार्यभार ग्रहण करना
This is to certify	प्रमाणित किया जाता है
Till further orders	अगले आदेश होने तक
Urgently required	अविलंब चाहिए, तुरंत आवश्यकता है
All rights are reserved	सर्वाधिकार सुरक्षित है
Sanctioned as a special case	विशे-न मामले के रूप में मंजूर किया गया
We are sorry for the inconvenience caused to you	आपको जो असुविधा हुई, उसके लिए हमें खेद है
We are not bound to accept these conditions	हम इन शर्तों को स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं हैं ।
Issue today	आज ही जारी करें
Kindly Check	कृपया जाँच कर लें

राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए केंद्रीय कार्यालयों को राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार भी प्रदान किए जाते हैं।

— दुर्गा सिंह
पत्नी - श्री प्रवीर कुमार सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक (एफ जी डी)

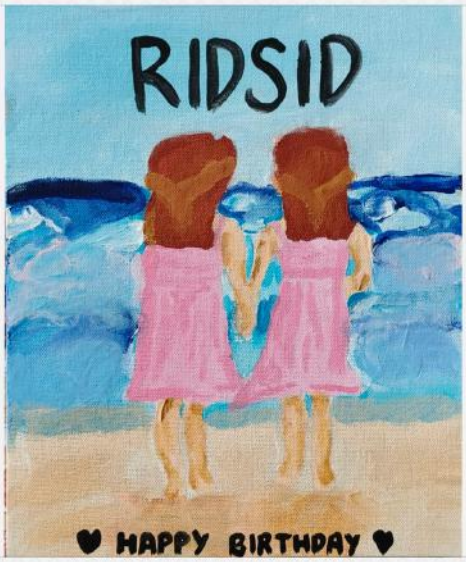

— सुनीधि श्रीवास्तव
पुत्री - श्री रंजय श्रीवास्तव
उप महाप्रबन्धक (सूचना प्रौद्योगिकी)

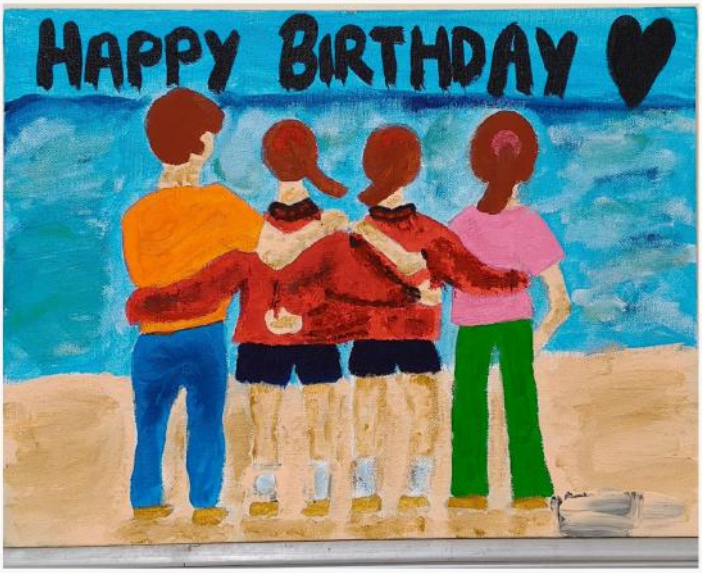

— सिमरन श्रीवास्तव
पुत्री - श्री रंजय श्रीवास्तव
उप महाप्रबन्धक (सूचना प्रौद्योगिकी)

— अंजु सिंह
पत्नी - श्री ललित कुमार सिंह
अपर महाप्रबन्धक (सीएंडआई मेंटेनेंस)

एनटीपीसी कोरबा हिंदी पत्रिका नाम सुझाव प्रतियोगिता परिणाम

"कोरबा किरण"

चयनित शीर्षक

रंजीत कुमार मौर्य
वरिष्ठ सहायक अभियंता (एफ़एम)

"कोरबा कृतियाँ"

प्रशंसनीय प्रविष्टि

मुनेश कुमार विश्वकर्मा
उप महाप्रबन्धक (पर्या. प्रबं.)

" ऊर्जा धारा "

प्रशंसनीय प्रविष्टि

महेश्वरला नागा प्रकाश
अभियंता (प्रचालन)

एनटीपीसी कोरबा सुर्खियों में

लास्ट पेज

एनटीपीसी कोरबा में 400 केवी स्विचयार्ड के लिए कियोस्क आधारित सबस्टेशन ऑटोमेशन सिस्टम का शुभारंभ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 25वीं बैठक सम्पन्न

निर्बाध बिजली आपूर्ति का मिशन होगा मजबूत : राजीव

कोरबा, 06 अगस्त (देशबन्धु)। एनटीपीसी कोरबा ने अपनी तकनीकी प्रगति में एक और महत्वपूर्ण कदम बढ़ाते हुए कियोस्क आधारित सबस्टेशन ऑटोमेशन सिस्टम का सफलतापूर्वक शुभारंभ किया। इस प्रणाली का उद्घाटन राजीव खन्ना, कार्यकारी निदेशक (ईडी), एनटीपीसी कोरबा द्वारा वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति में किया गया।

इस परियोजना के प्रथम चरण के तहत जनरेशन यूनिट-3 बे को सफलतापूर्वक इस उन्नत एसएएस प्लेटफॉर्म पर माइग्रेट कर दिया गया है, जिससे आगामी चरणों में शेष बे को भी इस प्रणाली से जोड़ा जाएगा। नवीनतम एसएएस प्रणाली रीयल-टाइम मॉनिटरिंग, बेहतर परिचालन विश्वसनीयता तथा स्विचयार्ड संचालन में कुशल नियंत्रण सुनिश्चित करेगी। यह पहल एनटीपीसी कोरबा की स्मार्ट तकनीक अपनाकर परिचालन क्षमता एवं विद्युत प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। उद्घाटन अवसर पर राजीव खन्ना ने कहा, सबस्टेशन ऑटोमेशन सिस्टम का शुभारंभ हमारे स्विचयार्ड संचालन को आधुनिक बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। यह तकनीक विश्वसनीयता और दक्षता को बढ़ाएगी तथा एनटीपीसी कोरबा के सुरक्षित और निर्बाध विद्युत आपूर्ति के मिशन को मजबूत करेगी।

चित्रकला, रैली व वॉल पेंटिंग के जरिए स्वच्छता का संदेश दिया

कोरबा | मंगलवार को एनटीपीसी कोरबा के सीएसआर प्रभाग एवं स्वच्छता पुकारे फाउंडेशन के संयुक्त प्रयास से ग्राम धनरास व जमनीपाली के शासकीय विद्यालयों में स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। छात्रों को स्वच्छता, व्यक्तिगत साफ-सफाई और पर्यावरण संरक्षण के महत्व की जानकारी दी गई। विद्यालय परिसर में स्वच्छता विषय पर आकर्षक वाल पेंटिंग की गई। साथ ही चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित कर बच्चों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित किया गया। विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। छात्रों ने रंग-बिरंगे चित्रों और नारों के माध्यम से स्वच्छ भारत और स्वच्छ पर्यावरण का संदेश देते हुए रैली निकाली। विद्यालय प्रबंधन और शिक्षकों ने इस पहल की सराहना की और कहा कि इस प्रकार के आयोजन बच्चों को जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करते हैं।

अमर उजाला | कोरबा/रायगढ़

भारतीय फुटबॉल का ऐतिहासिक क्षण महिला टीम ने एएफसी विमेंस एशियन कप 2026 के लिए क्वालिफाई किया

छत्तीसगढ़ की किरण पिस्दा, एनटीपीसी कोरबा के नैगम सामाजिक दायित्व से समर्थित, ऐतिहासिक भारतीय टीम का हिस्सा

एनटीपीसी कोरबा द्वारा आयोजित सब-जूनियर अंतर-जिला राज्य फुटबॉल चैम्पियनशिप में डीएफए रायपुर बना विजेता

इस पहल में तीन चरण शामिल हैं

1. 7-दिवसीय अंतर-जिला टूर्नामेंट – जिलों से श्रेष्ठ खिलाड़ियों का चयन
2. 21-दिवसीय कोचिंग कैंप – चयनित 30 खिलाड़ियों को गहन प्रशिक्षण
3. अंतिम चयन – 15-18 खिलाड़ियों का राज्य टीम के लिए चयन।

एनटीपीसी कोरबा में 400 केवी स्विचयार्ड के लिए कियोस्क आधारित सबस्टेशन ऑटोमेशन सिस्टम का शुभारंभ

कोरबा। एनटीपीसी कोरबा ने अपनी तकनीकी प्रगति में एक और महत्वपूर्ण कदम बढ़ाते हुए कियोस्क आधारित सबस्टेशन ऑटोमेशन सिस्टम (SAS) का सफलतापूर्वक शुभारंभ किया। इस प्रणाली का उदघाटन राजीव खन्ना, कार्यकारी निदेशक (ED), एनटीपीसी कोरबा द्वारा वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति में किया गया।

इस परियोजना के प्रथम चरण के तहत, जनरेशन यूनिट रु3 बे को सफलतापूर्वक इस ...

सोनभद्र गुरुवार, 10 जुलाई 2025 | गांव गिराव

भारतीय फुटबॉल का ऐतिहासिक क्षण : महिला टीम ने एएफसी विमेंस एशियन कप 2026 के लिए क्वालिफाई किया

छत्तीसगढ़ की किरण पिस्दा, एनटीपीसी कोरबा के नैगम सामाजिक दायित्व से समर्थित, ऐतिहासिक भारतीय टीम का हिस्सा

कोरबा। राष्ट्रीय गौरव के इस क्षण में, भारतीय सीनियर महिला फुटबॉल टीम ने आधिकारिक क्वालिफाइंग प्रक्रिया के माध्यम से एएफसी विमेंस एशियन कप 2026 के लिए क्वालिफाई कर लिया है। यह टूर्नामेंट में उनकी 2022 के बाद पहली उपस्थिति होगी और पहली बार टीम ने क्वालिफायर जीतकर टूर्नामेंट में स्थान हासिल किया है। यह उपलब्धि शुक्रवार, 7 जुलाई 2025 को थाईलैंड के चियांग माई में स्थित 700वें वर्षगांठ स्टेडियम में मेजबान टीम थाईलैंड पर 2–1 की रोमांचक जीत के साथ सुनिश्चित हुई।

भारत ने ग्रुप बी में सभी चार क्वालिफाइंग मैच जीतकर शीर्ष स्थान प्राप्त किया। यह क्वालिफिकेशन इसलिए भी ऐतिहासिक है क्योंकि भारत ने 18 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद एशियन कप के लिए सीधे क्वालिफाई किया है क्‍ पिछली बार यह 2003 में हुआ था, जब मौजूदा प्रारूप लागू नहीं था।

इस 23 सदस्यीय भारतीय टीम में छत्तीसगढ़ के बालोद जिले की उभरती फुटबॉल स्टार सुश्री किरण पिस्दा भी शामिल हैं, जो श्री महेश राम पिस्दा की पुत्री हैं। उनका चयन राष्ट्रीय टीम में उनके परिवार ही नहीं, बल्कि पूरे छत्तीसगढ़ राज्य के लिए गर्व का विषय है।

किरण के अंतरराष्ट्रीय मंच तक के सफर में एनटीपीसी कोरबा की नैगम सामाजिक दायित्व (छ) पहल ने अहम भूमिका निभाई है, जिसने स्थानीय प्रतिभाओं को संवारने और खेलों को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयास किए हैं। राष्ट्रीय टीम में उनका चयन यह प्रमाणित करता है कि नैगम सामाजिक दायित्व से संचालित खेल कार्यक्रम ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों के प्रतिभावान खिलाड़ियों की पहचान और सशक्तिकरण में कितने प्रभावी हैं।

थाईलैंड के खिलाफ भारत की जीत इसलिए भी ऐतिहासिक है क्योंकि इससे पहले भारतीय महिला टीम कभी थाई टीम को पराजित नहीं कर पाई थी। क्वालिफायर्स में उनका अजेय अभियान भारतीय महिला फुटबॉल की बढ़ती ताकत और क्षमता को दर्शाता है।

यह सफलता छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में विकसित हो रहे मजबूत फुटबॉल इकोसिस्टम का भी परिणाम है, जिसे प्रायोजकों और संस्थाओं के निरंतर समर्थन से बल मिला है। छत्तीसगढ़ फुटबॉल संघ ने कहा, "एनटीपीसी कोरबा को विशेष धन्यवाद, जिन्होंने अपने नैगम सामाजिक दायित्व कार्यक्रमों के माध्यम से जमीनी स्तर के खेलों में निवेश कर खिलाड़ियों जैसे कि किरण पिस्दा को आगे बढ़ाया।"

अब जब भारत एएफसी विमेंस एशियन कप 2026 के लिए ऑस्ट्रेलिया जाने की तैयारी कर रहा है, तो किरण पिस्दा जैसी खिलाड़ियों का योगदान और एनटीपीसी जैसी संस्थाओं का समर्थन यह दर्शाता है कि कैसे समुदायों, संस्थानों और कॉर्पोरेशनों के समन्वय से राष्ट्रीय खेलों में मील के पत्थर हासिल किए जा सकते हैं।

नवभारत का एक पेड़ मां के नाम अभियान का आगाज आज से

एसपी कार्यालय परिसर में पौधरोपण के साथ पर्यावरण संरक्षण मुहिम का होगा शंखनाद

नवभारत ब्यूरो । कोरबा।

29 जुलाई को तहसील कार्यालय दर्री में श्रम मंत्री देवांगन के मुख्य आतिथ्य में रोपे जाएंगे पौधे

ग्रीन कोरबा के सपने को साकार करने नवभारत पर्यावरण संरक्षण की मुहिम कई वर्षों से चला रहा है। इस साल मुहिम का आगाज आज से होने जा रहा है। पुलिस अधीक्षक कार्यालय में पौधरोपण कर अभियान का शंखनाद किया जाएगा। इसके एक दिन बाद मंगलवार 29 जुलाई को दर्री तहसील कार्यालय परिसर में प्रदेश के श्रम, उद्योग व वाणिज्य मंत्री लखनलाल देवांगन के मुख्य आतिथ्य में पौधरोपण कर अभियान को गति दी जाएगी। नवभारत द्वारा वर्षा ऋतु में पर्यावरण संरक्षण की मुहिम चलाते हुए पिछले कई वर्षों से शहर के अलग अलग क्षेत्रों में पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस साल अभियान का आगाज आज से होने जा रहा है। कार्यक्रम में महापौर संजूदेवी राजपूत, सभापति नूतन सिंह ठाकुर, कलेक्टर अजीत बसंत, पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ तिवारी, भाजपा जिलाध्यक्ष गोपाल मोदी, पार्षद अशोक चावलानी, जिला भाजयुमो महामंत्री नरेन्द्र देवांगन, एनटीपीसी कार्यकारी निदेशक राजीव खन्ना, अडानी पावर प्रोजेक्ट हेड सीवीके प्रसाद, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नीतिश ठाकुर, एसडीएम कोरबा सरोज महिलांगे, एनटीपीसी एजीएम शशि शेखर, पीआरओ ऊष्मा घोष, बालको चीफ कार्पोरेट अफेयर्स धनंजय मिश्रा, कार्पोरेट हेड शुचि मिश्रा, अडानी पावर पीआरओ अतुल गुप्ता, सीएसपी दर्री विमल पाठक, दर्री थाना प्रभारी ललित चंद्रा, उद्यान विभाग सहायक संचालक पतराम सिंह, एनकेएच डायरेक्टर शोभराज चंदानी, एमजेएम हास्पिटल के डायरेक्टर डॉ. प्रिंस जैन, सिटी डेंटल के डायरेक्टर डॉ. सरफराज खान व सिटी हास्पिटल के डायरेक्टर आफताब सिद्दकी की विशेष मौजूदगी रहेगी।

एक पेड़ माँ के नाम

सभी पौधे अवश्य लगाएं : ठाकुर

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नीतिश ठाकुर ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए हम सब को अपनी जिम्मेदारी का अहसास होना चाहिए। कम से कम हर व्यक्ति को एक पौधा लगाकर उसे वृक्ष बनाने तक का संकल्प लेना चाहिए। नवभारत की यह मुहिम इसी सोच को समाज के सामने रखने का एक अनूठा प्रयास है।

नवभारत के अभियान से मिलेगी प्रेरणा

एनटीपीसी एजीएम (एचआर) शशि शेखर ने नवभारत के अभियान की सराहना करते हुए कहा कि निश्चित ही यह कोरबा के लोगों के लिए प्रेरणा बनेगी। अपने मूल दायित्व के अलावा पर्यावरण संरक्षण भी हमारी जिम्मेदारी है, यह नवभारत का अभियान हमें बताता है।

नवभारत की सराहनीय मुहिम

राजू स्पोर्टस के प्रोपराइटर राजू जायसवाल ने कहा कि नवभारत की पर्यावरण संरक्षण की यह मुहिम सराहनीय है। समाज में पौधरोपण को लेकर जन जागरूकता फैलाने का जो काम किया जा रहा है, वह काबिले तारीफ है। हम सब को इस तरह के अभियान को बढ़ावा देना चाहिए।

पौधरोपण आज की महती आवश्यकता

सैंडी जिम के संचालक सुमित पटेल ने कहा कि पर्यावरण प्रदूषण का ग्राफ तेजी से बढ़ रहा है। पर्यावरण को बचाने पौधरोपण आज की महती आवश्यकता है। नवभारत परिवार द्वारा जो अभियान चलाया जा रहा है, वह प्रदूषण के खिलाफ लड़ाई में एक महत्वपूर्ण कदम है।

"खोजिए हिन्दी साहित्य का खजाना"

प्रिय पाठकों,

हिन्दी साहित्य भाव, विचार और संस्कृति का अनुपम भंडार है। प्रस्तुत है एक विशेष साहित्यिक प्रश्नावली–

खंड – 1 : काव्य–लोक

1. "जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।"
— कवि का नाम तथा भावना लिखिए।

2. "प्रथम रश्मि का आना रंगिणी...
हे बाल विहंगिनी? पाया तू ने यह गाना।"
— कवि का नाम लिखिए।

3. "मित्रता बड़ा अनमोल रत्न, कब इसे तोल सकता है धन।"
— कवि तथा रचना का नाम लिखिए।

4. "कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।"
— कवि तथा विषय लिखिए।

5. "वह तोड़ती पत्थर; देखा मैंने इलाहाबाद के पथ पर।"
— कवि का नाम तथा प्रकाशन वर्ष लिखिए।

नोट : उक्त प्रश्नों के उत्तर दिए गए क्यूआर कोड के माध्यम से राजभाषा अनुभाग, एनटीपीसी कोरबा को प्रेषित करने का कष्ट करें। प्रश्नों के उत्तर पत्रिका प्रकाशन के पश्चात ई-मेल द्वारा प्राप्त होने की तिथि से दस दिनों तक ही स्वीकार किए जाएंगे। प्राप्त प्रविष्टियों में से तीन सही प्रविष्टियों को प्राथमिकता के आधार पर उचित प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया जाएगा तथा विजेताओं के नाम पत्रिका के आगामी अंक में प्रकाशित किए जाएंगे। यह प्रतियोगिता केवल एनटीपीसी कोरबा परियोजना के कर्मचारियों हेतु है। निर्णायक मण्डल का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा।

खंड – 2 : उपन्यास–लोक

6. "यह एक ऐसा इतिहास है जो लोक मानस की भागीरथी के साथ बहता, पनपता और फैलता है और जन सामान्य के सांस्कृतिक पुख्तापन में जिंदा रहता है "
यह कथन किस उपन्यास के आरंभ में है?
क) दिलोदानिश
ख) समय सरगम
ग) जिंदगीनामा
घ) मित्रो मरजानी

7. "सुधा की आँखों में एक अजीब सी वेदना थी, जिसे चंदर समझ नहीं पा रहा था"
— उक्त पंक्तियाँ किस उपन्यास से ली गई है लेखक का नाम भी बताइए ।

8. हिन्दी का प्रथम उपन्यास और उसके लेखक का नाम लिखिए।

9. रामधारी सिंह 'दिनकर' की किस कृति में कर्ण का चरित्र प्रमुख है?

10. "होरी ने गाय की ओर प्रेम और श्रद्धा से देखा; उसके लिए वह केवल पशु नहीं, बल्कि जीवन की सबसे बड़ी अभिलाषा थी।"
उपर्युक्त पंक्ति के आधार पर बताइए–
यह पंक्ति किस लेखक के प्रसिद्ध उपन्यास से ली गई है?

पड़ते ही श्रवणों में जिसकी सुधा बरस जाती,
सोयी संवेदनाओं में नव चेतना जगाती।
जिसके अक्षर-अक्षर में संस्कृति का दीप जला,
जिसने जन-मन के तम में ज्ञान-प्रकाश है ढला।
जिसकी वाणी से ही जीवन का विस्तार हुआ,
भारत का गौरव, हिन्दी से संसार हुआ।

एनटीपीसी कोरबा, जमनीपाली, जिला कोरबा, छत्तीसगढ़ -495450